मजलिस -9

ज़ाकिर : सफ़वतुल उलमा मौलाना सैय्यद कल्बे आबिद नक़वी रहमत मआब

बिस्मिल्लाहिर्रहमा निर्रहीम। अलहम्दो लिल्लाहे रब्बिल आलमीन। अर्रहमानिर्रहीम। मालिके यौमिद्दीन। (सलवात)

उस अल्लाह के लिये हम्द जो कायनात का रब है। जिसकी रूबूबियत पूरी कायनात पर जिसकी रूबूबियत आलामीन पर फ़ैली हुई है। ये न समझना कि ख़ाली ज़मीन ही तुम्हारी पूरा आलम है। ये एक आलम नहीं इसके अलावा हज़ारों आलम हैं। मगर जहाँ–जहाँ अलाम पाये जाते है। वहाँ–वहाँ अल्लाह की रूबूबियत भी पायी जाती है। (सलवात)

हम्द उस अल्लाह के लिये जो आलमीन की तरबियत करने वाला है जो आलमीन का रब है। एक बात तवज्जो फ़रमायें आप बज़ाहिर यहाँ पर अगर लफ़ज़े ख़ालिक होता तो ज़्यादा मुनासिब था। अलहम्दो लिल्लाहे ख़ालिकुल आलमीन। उस अल्लाह की हम्द जो आलमीन का पैदा करने वाला है मगर ''ख़ालिक'' इरशाद नहीं होता रब इरशाद है, हालाँकि पहले पैदा किया बाद में रूबूबियत है। पहली अल्लाह की सिफ़त है ख़ल्लक़ियत यानी कायनात को पैदा किया जब पैदा हो गयी। जभी तो परवरिश की, जबही तो पाला। लेकिन कुरआने मजीद अलहम्दो लिल्लाह ख़ालिकुल आलमीन नहीं कहता। कहता है अलहम्दो लिल्लाहे रब्बिलआलमीन। हम्द उस अल्लाह के लिये जो आलमों का रब है, जो आलमों का पालने वाला है। मगर मैं अर्ज़ करूँगा कि यहीं तो ऐजाज़े कुरआन खुलता है। तो समझा कि ख़ालेकुल आलमीन होना चाहिये था। लेकिन जो ख़ालिक़ होता है, बनाने वाला होता है, ज़रूरी नहीं कि उसका राबेता बनने वाले से मुसलसल क़ायम भी रहे। बनाने के बाद रब्त टूट भी जाता है। ये मिंबर किसी ने बनाया बग़ैर बनाये हुऐ नहीं बना। लेकिन आज मुझे पता नहीं कि वो बनाने वाला कौन था। मिंबर मौजूद बनाने वाले की ख़बर भी नहीं। ये लाऊडस्पीकर किसी ने बनाया मगर मुझे पता नहीं कि किस ने बनाया। मालूम होता है बनाने वाले से बनने वाले का रब्त टूट जाता है। लेकिन तरबीयत हो ही नहीं सकती जब तक मुरब्बी से रब्त क़यम न रहे। तो मतलब ये था कि ये न समझना कि पैदा करने के बाद तेरा ताल्लुक़ मुझ से ख़त्म हो गया। मैं तो आलमीन का रब हूँ हर वक़्त मुझ से राबेता रख ताकि रूबूबियत की मंज़िल पर गुज़रता रहे। (सलवात)

अलहम्दो लिल्लाहे रब्बिलआलमीन हम्द है उस अल्लाह के लिये जो आलमीन का रब है। रब के क्या मआनी। रब के मआनी तरबियत करने वाला। तरबियत के क्या मआनी? तरबियत का मतलब फ़ितरत को बदल देना नहीं है, तरबियत का मतलब तबदील कर देना नहीं है। तरबियत का मतलब होता है जिस में जितनी सलाहीयत है, इंतेज़ाम करना कि वो सलाहियत पूरी तरह ज़ाहिर हो जाये। उसकी मिसाल देदूँ। आपने एक उस्ताद के सामने दो लड़कों को तालीम के लिये भेजा। साल भर तक एक उस्ताद ने मालूम व मोअय्यन वक़्त में मिसालन दस बजे से चार बजे तक एक किताब दोनों लड़कों को पढ़ाई पढ़ाने वाला एक। वक़्त तालीम का एक पढ़ने वाले। दो। लेकिन साल भर के बाद जब इम्तेहान हुआ तो नतीजे में एक थर्ड पास हुआ और दूसरा फर्स्ट। तो क्या पढ़ाने वाले ने उसकी तरफ़ कम तवज्जो कि थी? एक ही मुददत तक

दोनों को पढ़या था और एक अंदाज़ से, लेकिन ये थर्ड क्यों रहा और वो फर्स्ट क्यों रहा? इसलिये कि तरबियत के मआनी ये नहीं हैं कि कुन्द ज़हीन को ज़हन बना दिया जाये यह नहीं कि बेसलाहियत को साहेबे सलाहियत बना दिया जाये। तरबियत के मआनी हैं जिसमें जितनी सलाहित हो उसको पूरी तरह ज़ाहिर कर दिया जाये।

मिसाल देकर मतलब समझा दूँ। किसी नजूमी साहब ने बता दिया कि फ़लाँ जगह तेरे मकान में ख़ज़ाना है और मैंने खोदना शुरू किया। अब जो खोदा तो एक मटका निकल आया वो ख़ाली था उसमें कोयले भरे हुऐ थे मगर वो मटका निकल आया अब जो देखा मैंने वो गगरा या मटका बिल्कुल काला। समझ ही में नहीं आया कि ये काहे का है। अब मैंने क्या किया मांझना शुरू किया, साफ़ करना शुरू किया, जितना–जितना मांझता गया जितना जितना साफ़ करता गया मैल की तहें छूटती गयीं, यहाँ तक की अब मैल का एक ज़र्रा न रह गया। अब चमक कर वो गगरा या पतीला मेरे सामने आ गया। क्या हुआ मांजने के बाद अगर तांबे का था तो ताँबें का खुल गया। अगर पीतल का था तो पीतल नज़र आ गया। अगर चाँदी थी तो चांदी नज़र आ गयी। अगर सोना था तो सोना नज़र आया। मेरे मांजने ने उसको पीतल का नहीं बनाया। मेरे मांजने ने उसको चांदी का नहीं बनाया मेरे मांजने ने जितनी रूकावटें थीं वो दूर कर दीं। जो सलाहियत थी वो चमक कर सामने आ गयी। बस यही है तरबियत यानी जितनी रूकावटें हैं दूर कर दो ताकि सलाहियतें उभर कर सामने आ जायें।

अलहम्दो लिल्लाहे रब्बिलआलमीन। ज़रा तवज्जो फ़रमायें। मैं आलमीन का रब हूँ मैंने ही सब को पैदा किया है मैंने ही हर शैय को सलाहियत दी है मेरी ही अता कि हुई सलाहीयतें हैं लेकिन सलाहियतें देकर छोड़ नहीं दिया बल्कि उसका भी इंतेज़ाम किया कि वो सलाहियतें अपने नुकतए कमाल तक पहुँच सकें। वो सलाहियतें नुमायां हो सकें। उसका इंतेज़ाम क्या किया? एक दाना जो मेरे हाथ पर था उसमें सलाहियत थी कि ये नशो नुमा पाकर बढ़े उसमें शाख पैदा हो, उसमें पत्तियां पैदा हों, उसमें फूल आयें उसमें फ़ल आयें, लेकिन अगर ये दाना यूं ही पड़ा रहता सूख कर रह जाता। और नशो नुमा कि सलाहियत ज़ाहिर न होती। कब ज़ाहिर होती है नशो नुमा कि सलाहियत? जब ख़ाक के अन्दर छिपता है, जब मुनासिब तरी पहुँचती है, जब आफ़ताब की शुआएं सेंक सेंक कर उसमें नशो नुमा कि सलाहियत और रूउदगी की सलाहियत को ज़ाहिर करती हैं, तो अल्लाह ही ने उस दाने में सलाहियत दी थी कि ये बढ़े। अल्लाह ही ने ज़मीन में सलाहियत दी थी कि वो गेज़ा बने। अल्लाह ही ने पानी में सलाहियत दी कि वो नशो नुमा पैदा करे। अल्लाह ही ने आफ़ताब की शुआओं में ये सलाहियत पैदा की कि वो इसको उभारें और बढ़ायें। सलाहियत देना था ख़्ल्लाक़ियत। और ये इंतेज़ाम करना कि ये दाने से बढ़ कर दरख़्त बन जाये ये है रूबूबियत (सलवात) चूंकि आज आख़री मजलिस है इसलिये मैं ज़्यादा तशरीह नहीं करना चाहता न मौक़ा है ज़्यादा तशरीह का। तो रूबूबियत के मआनी हैं ज़्यादा इंतेज़ाम करना कि हर शय की सलाहियत पूरी तरह ज़ाहिर हो जाये, और नुक़्त–ए–कमाल तक पहुँच जाये। ये है रूबूबियत यह हैं रब होने के मआनी। जिस ने हर दाने में ये सलाहियत दी कि वो नशो नुमा पाकर बलन्द हो। क्या वो इंसान के लिये इसका इंतेज़ाम न करता कि ये अपने आख़री कमाल तक पहुँचे ये अपनी कमाल की मंज़िल को हासिल करे। जिसने हर शैय के लिये इंतेज़ाम किया कि उसकी सलाहियत ठिठुर कर न रहे जायें उसने इंसान के लिये भी इंतेज़ाम किया कि उसकी सलाहियतें भी उभर कर दुनिया के सामने आयें। अक़्ल देकर नहीं छोड़ा। ज़हन और हाफ़ेज़ा देकर तर्क नहीं किया कि इंसान की सलाहियतें नुमायां

होकर ज़ाहिर हों। ख़ल्लाक़ियत थी सलाहियतों का देना। रूबूबीयत का तक़ाज़ा था कि वो इंतेज़ाम किया जाये कि इंसान इंसान बन के दुनिया में ज़ाहिर हो। अगर ख़ालिक़ होता तो पैदा करके छोड़ देता। रब था लेहाज़ा शरीयतें भेजीं लेहाज़ा उसने अंबिया को मबऊस किया। ऐ नूह (अ0) तुम जाओ ऐ इब्राहीम (अ0) तुम जाओ ऐ ईसा (अ0) तुम जाओ आख़िर में ख़ातेमुन्नबीईन (स0) आप जाईये मेरे हबीब (स0) और जाकर जो इंसानी सलाहियतें हैं उनको नुक़्तऐ कमाल तक पहुँचा दीजिये।

इंसान की सलाहियत पेट भर लेना नहीं है वरना नबी के आने की ज़रूरत न थी। इंसान की सलाहियत लेबास पहन लेना नहीं है वरना रसूल की ज़रूरत न थी। इंसान की सलाहियत मकान बना लेना नहीं है वरना किसी पैग़ामबर के आने कि हाजत न थी। इंसान का कमाल ये है कि ये इतनी अज़मत हासिल कर ले कि काएनात उस के सामने सर झुका दे। इंसान की अज़मत को देखना था इसलिये आदम (अ0) पैदा हुऐ तो हुक्म दिया गया मलायका को कि ऐ मेरे मलायका आदम के सामने झुक जाओ सजदे में। मलायका से सजद–ए–ताज़ीमी क्यों करवाया गया? सिर्फ़ इसलिये सजद–ए–ताज़ीमी करवाया गया कि पता चल जाये आदम (अ0) की अज़मत। तो क्या वो छोड़ देता इंतेज़ाम न करता कि इंसान अपने कमाल तक पहुँच सके। इसीलिये उसने शरीयतें भेजीं। तरबियत में क्या होता है? रफ़्ता–रफ़्ता। लड़के को बिठाया पहले बग़दादी क़ायदा उसके बाद दूसरी किताब उसके बाद तीसरी किताब फ़िर आख़िर में वो (P. H. D) होकर निकला एकदम से पी0 एच0 डी0 नहीं हो जाता है। मांजना शुरू किया पहले एक तह उतारी फ़िर दूसरी तह उतारी आख़िर में वो चमक कर ज़ाहिर हुआ तो मालूम हुआ कि रफ़्ता–रफ़्ता सलाहियतें नशो तुमा पाती हैं इसीलिये शरीयतें बदलती गईं एक शरीयत के बाद दूसरी शरीयत, दूसरी के बाद तीसरी। जितनी–जितनी इंसानी सलाहियतें बढ़ती गयीं उसी के हिसाब से शरीयतों में तबदीली होती गयी आख़िर वो शरीयत आ गयी जो क़यामत तक के लिये काफ़ी है इंसान की ज़रूरतें पूरी करने के लिये (सलवात)।

दुनयावी मिसाल देदूँ। मैंने इब्तेदा से एम0 ए0 कर लिया। पी0 एच0 डी0 कर ली। डी0 लिट0 कर ली। अब डी0 लिट0 करने के बाद मैंने दरख़्वास्त भर दी कि मैं चाहता हूँ कि पाँच साल आपकी युनीवरसिटी में और पढ़ लूँ जवाब मिला जाइये तशरीफ़ ले जाइये। ये क्या हुआ साहब अब तक तो बराबर तालीम दी जा रही थी अब क्या होगा? कहा जी ये आख़री तालीम थी डी0 लिट0 जो आपको दे दी गयी तो अब बेकार। कहा नहीं अब आपकी ज़हनी सलाहियतें हैं आपकी तालीम मोकम्मल हो चुकी, अब उसी मंज़िल से काम लेने की मंज़िल है। मैं अर्ज़ करूँगा शरीयतों का बदलना यही था ऐ नूह (अ0) इब्तेदाई शरीअत ले जाओ आऐ इब्राहीम (अ0) उससे बलन्द शरीयत आऐ मूसा (अ0) उससे बलन्द शरीयत आये ईसा (अ0) उससे बलन्द शरीयत आये ख़ातेमुन्नबीईन (अ0) अब आख़री हदे तालीम तक पहुँचा दो। अब उनकी ज़हनी सलाहियतें हैं अमल की दुनिया है अब जितना पढ़ते जायेंगें उतना तरक़्क़ी करते जायेंगें। ये आख़री शरीयत है अब उसके बाद किसी पढ़ाने कि ज़रूरत नहीं है। अब किसी नई मिस्तहे निसाब की हाजत नहीं किसी नई शरीयत की हाजत नहीं, अब तुम्हें जो कुछ तरक़्क़ी मिलेगी इसी शरीआत की पाबन्दी से अब तुम्हें जो बलन्दी मिलेगी इसी शरीअत की पाबन्दी से। दुनिया ठोकरें खायेगी तर्जुबे करती रहेगी लेकिन जब तर्जुबे की मंज़िल से गुज़र जायेगी ठोकरें खा कर वहीं आ जायेगी जहां इस्लाम पहले पहुँचाना चाहता था।

कहने वालों ने कह दिया कि मिंयाँ और बीवी का रिश्ता हमेशा का है। अरे अब बंध गये तो अलग केसे हों? हमेशा का है मिंया बीवी का

रिशता। एक मरतबा जुड़े तो जुड़े। और इस्लाम ने नमसाअद हालात ना मुनासिब हालात में जब किसी तरह आपस में निबाह हो ही न सके तलाक़ की गुंजाईश रखी। लेकिन शरतें हैं, ये नहीं कि ज़रा सा गुस्सा आया कहा जा निकल जा। हमारे यहाँ तो गुस्से में सौ मरतबा भी तलाक़–तलाक़ कह दे, कुछ न होगा। वो आज उनको तरमीमों की ज़रूरत पड़ रही है। तालीलों की ज़रूरत पड़ रही है। जिन्होंने कहा कि तीन मरतबा कहा और हमेशा के लिये गये। हमारे यहाँ गुंजाईश, कि नहीं गुस्से में नहीं सोच समझ के, उस वक़्त जब देख लो कि हालात इजाज़त नहीं देते आपस में निबाह की, तब और शरतें लगा कर मैं लाख कहूँ तलाक़ दिया तलाक़ नहीं होगी जब तक दो आदिल गवाह न हों यह आदिल गवाहों की क्यों शर्त? इसलिए कि आदिल गवाह जब तुम रखोगे, और तलाक़ है बदतरीन चीज़ इस्लाम में, तो वो समझने बुझाने की कोशिश करेंगें। वो चाहेंगें कि पहले आपस में हालात दुरूस्त हो जायें। क्यों एक दूसरे से अलग हो जाये। लेकिन जब वो भी मजबूर हो जायें और देखें कि किसी तरह निबाह हो ही नहीं सकता तो इस्लाम ने गुंजाईश रखी कि अब अलग हो जायें मियाँ बीवी। अब तुम्हारी दुनिया अलग उनकी दुनिया अलग। तलाक को लोग बहुत मायूब समझते थे। लेकिन आज हर हुकूमत तलाक को हक़ तस्लीम करके बतारही है कि जहाँ इस्लाम पहले पहुँचा था दुनिया ठोकरें खा कर आज वहाँ आ गयी। अब आप हर कानून में तलाक़ की गुंजाईश देखेंगें इस्लाम ने जो पहले कहा उसको आज माना गया।

पहले जो मियाँ ने कह दिया कि बेटी की मीरास का कोई हक़ ही नहीं आपके यहाँ भी यहीं रस्म थी हिन्दोस्तान की, जी बेटी का हक़ क्या है? दूसरे घर में चली जायेगी मेरी दौलत लेकर, तो बेटी को मीरास में कोई हक़ नहीं। इस्लाम ने सब से पहले बेटी को मीरास में हक़ दिलवाया। लेकिन आज फिर दुनिया पलट के वहीं आयी जहाँ इस्लाम पहले पहुँचा था। और आज हर क़ानून ने बेटी का हक़ मीरास में तस्लीम करके बताया कि इस्लामी क़वानीन वो हैं जो अदलो इंसाफ़ के मुताबिक़ हैं। बस अब मुशकिल ये है कि मैंने ज़ोर से गेंद फेंका जितना तेज़ी से जायेगा टकरा कर उतनी ही तेज़ी से पलटेगा। बस इंसान यही करता है कि कभी एक तरफ़ जाता है तो टकराता है पलटता है तो दूसरी तरफ़ उसी ज़ोर से आ जाता है। और इस्लाम ने हमेशा ऐतेदाल का लेहाज़ रखा है। बेटी को हक़ दिलवाया लेकिन ज़िम्मादारियाँ देखकर। बेटी को हक़ दो लेकिन ये तो देखो कि ज़िम्मेदारीयाँ कितनी हैं? अरे बेटी जब शौहर के घर चली गयी तो नानो नफ़्क़ा शौहर पर वाजिब। अगर शौहर न रहे तो बेटे पर नानो नफ़्क़ा वाजिब। बाप के घर में हो तो बाप पर नानो नफ़्का वाजिब। और शौहर की ज़िम्मेदारी क्या? अपनी ग़ेज़ा अपना नफ़्क़ा भी जौज़ा का भी जितने लड़के हों उन सब का भी। तो मर्द पर ज़िम्मादारियाँ ज़्यादा औरत पर माली ज़िम्मादारियाँ कम। लेहाज़ा कुदरत ने अदल व इंसाफ़ का लेहाज़ रख कर औरत को एक हिस्सा दिलवाया, मर्द को उसके मुकाबिल में दोहरा दिलवाया। जितनी ज़िम्मेदारीयां ज़्यादा हैं उतना ही मिरास में हक़ ज़्यादा है।

अब मैं कहाँ तक अर्ज़ करूँ इस्लाम के क़वानीन वो कि दुनिया ठोकरें खा खा कर वहाँ आ रही है कि जहाँ इस्लाम पहले रहनुमाई कर चुका। तौहीद की तालीम वो किसी मज़हब में इतनी बलन्द तौहीद की तालीम नहीं मिलेगी जितनी इस्लाम ने दी। एख़लाक़ियात में नुक़तए नज़र इतना बलन्द कि जहां कोई भी एख़लाक़ी तालीम दूसरे मज़हब की वहाँ नहीं मिलेगी जहाँ इस्लाम में नज़र आ रही है और मैं सच अर्ज़ करता हूँ कि सिर्फ़ यही नहीं कि ज़बानी तालीम । इंसान सुनने से ज़्यादा देखने से मुतास्सिर होता है। खाली क़ौल असर नहीं करता जितनी सीरत असर करती हैं लेहाज़ा इस्लाम ने ख़ाली

कहने पर इकतेफ़ा नहीं कि बल्कि अमल के मोकम्मल नमूने भी पेश कर दिये। कि देखो लफ़्ज़ें कुरआन से लेना सीरत उन से लेना यह बतायेंगें कि इस्लाम की हक़ीक़त क्या है (सलवात)

तो अल्लाह वो जो आलमीन का रब। सभी का इंतेज़ाम किया और इंसान की नशो नुमा का भी इंतेज़ाम किया। आज कहा जाता है कि साहब मज़हब की ज़रूरत तो थी लेकिन इब्तेदा में, अब हम समझदार हैं, हम अच्छे बुरे को समझते हैं, इंसान ने इल्म में बड़ी तरक्की कर ली। चाँद पर पहुँच रहा है। एक वक़्त वो था कि चांद को अपना माबूद मानता था, और आज चाँद को कदमों से रौंद रहा है। क्या दोनों दौर बराबर हैं? वो दौर और था, जेहालत वाला, जब इंसान को मज़हब की ज़रूरत थी। अब इंसान समझदार है अब इंसान अपने अच्छे बुरे को समझ सकता है आज हमें मज़हब की हाजत नहीं। मज़हब अपनी ख़िदमत कर चुका। अब उसका ज़माना गुज़र गया अब उसकी हाजत नहीं है। मिसाल दी जाती है। मैंने सुनी हैं मिसालें कि जिस तरह बचपने में जब कोई बच्चा चलने लगता है तो ज़रूरत होती है कि मां बाप उंगली पकड़ लें ताकि सहारे से मां बाप के वो ठोकर न खाये, गिर न पड़े लेकिन अगर किसी जवान को आप हाथ पकड़ कर चलाना चाहें तो उस की तेवरियों पर बल पड़ जायेंगें अरे क्या मैं ख़ुद नहीं चल सकता हूँ मैं तो दूसरों को सहारा बन जाऊँगा मुझे आप क्यों सहारा दे रहे हैं। तो मालूम हुआ कि इसी तरह इंसानियत का एक बचपना था जब मज़हब के सहारे की ज़रूरत थी और आज इल्म के ज़रिए इंसान जवानी की हदों में है। अब उसको किसी मज़हब के सहारे की ज़रूरत नहीं। अपना नेक व बद ख़ुद समझ सकता है।

मैं कहूँगा आप जवान हो गये अल्लाह मुबारक करे मगर पूछना इतना है कि काहे में जवान हुऐ? मज़हब ने आप की ख़िदमतें कीं अब मज़हब की आपको ज़रूरत न रही मगर ज़रा ये तो बता दिजिये कि मज़हब की ख़िदमत क्या थी। और जवान आप काहे में हुऐ हैं। आप ने तरक़्क़ी की, ऊंची से ऊंची ईमारतें बनाना शुरू कर दीं पहले फैलाव में ज़्यादा होती थीं और अब ऊँचाई में ज़्यादा हैं गोया अल्लाह तक पहुँच रहे हैं तो क्या यही तरक़्क़ी है कि बीस मंज़िला और पच्चीस मंज़िला ईमारत बनाली। आपने बड़ी तरक़्क़ी की पहले टेरीकाट और टेरीलीन नहीं मिलता था। आज आपने नये—नये कपड़े ईजाद कर लिये। आप पहले घोड़े और दूसरे जानदारों को सवारी के तौर पर इस्तेमाल करते थे। और अब रेल ईजाद कर ली और मोटर ईजाद कर लिया और हवाई जहाज़ बना लिया जहाँ आप महीनों में जाते थे वहाँ आप घंटों में पहुँच जाते हैं तो क्या आप यही तरक़्क़ी कह रहे हैं। कि जवान हो गये। पहले हवा में परवाज़ करना सिर्फ़ तायर का काम समझा जाता था मगर आज आप हवा में उड़ रहे हैं। सच अर्ज़ कर रहा हूँ कि अगर नबी इसलिये आये होते तो आज मज़हब की ज़रूरत न थी मैं जानता हूँ कि आपने बड़ी तरक़्क़ियाँ की हैं आपने ऐटम बम बनाया है आपने हैड्रोजन बम बनाया है आपने बड़ी उंची ईमारतें बनायीं हैं लेकिन अंबिया व मुरसलीन न आपको बम बनाना सिखाने आये थे न आपको इंजीनयर बनाने के लिये आये थे। वो आपको इंसान बनाने आये थें मैं पूछता हूँ कि आपकी इंसानियत कितनी उंची हुई। ईमारतें उंची हो गयीं इंसानियत कितनी उंची हुई। हज़ार बरस पहले जितनी मक्कारियाँ थीं वो आज कम हो गयीं तो मज़हब की ज़रूरत नहीं है हज़ार बरस पहले आप जितना ज़ुल्म करते थे आज मज़ालिम कम हो गये तो शरीयत की हाजत नहीं है। अगर झूठ पहले के मुकाबले में कम हो गये तो मज़हब की हाजत नहीं हैं मगर मैं देखता हूँ कि जितना आप जवान होते जाते हैं मक्कारियां भी बढ़ती जाती हैं। झूठ भी बढ़ता जाता है फ़रेब भी बढ़ता जाता है। ज़ुल्म भी बढ़ता जाता है पहले अफ़राद क़त्ल किये जाते थे और अब क़ौमें तबाह कि जाती हैं तो ये न कहिये कि मज़हब की

ज़रूरत न रहीं ये कहिये कि आज मज़हब की हाजत और बढ़ गयी है ताकि इंसान को सही ताअलीम मिल सके। (सलवात)।

हर हम्द व सताईश उस अल्लाह के लिये जो आलामीन का रब है ये रूबूबियत ही थी कि उस ने अंबिया भेजे उस ने मुरसलीन भेजे। मैं सच अर्ज़ करता हूँ कि आज भी इंसान को इंसानियत की तालीम देने आज भी इंसान को एख़लाक़ सिखाने आज भी इंसान को बलन्द सिफ़ात बनाने के लिये मज़हब ही ज़िम्मेदार हैमैं नहीं, मेरे ऐसे नहीं, जिन्होंने मज़हब को सिर्फ रसमन एख़तियार कर लिया है। मैं मुसलमान इसलिये हूँ कि मुसिलमान घराने में पैदा हुआ। मैं शिआ इसलिये हूँ कि माँ बाप शिआ थे शीईयत है मगर काहे के लिए ख़ाली ज़बान से अपने को शिआ कहने के लिये। काश आज मैं मुसलमान हो जाता और शिआ बन जाता, सही मआनों में जिन्होंने मज़हब हो अख़तियार कर लिया। उनकी ज़िन्दगियाँ संवर गयीं सुधर गयीं और मैं सच अर्ज़ करता हूँ कि इंक़ेलाबे ईरान आज भी इंसान को फ़िक्रो नज़र की दावत दे रहा है अरे इंक़ेलाब से पहले भी हमें देख लो इंक़ेलाब के बाद भी हमें देख लो।

जो हालात हैं वही अर्ज़ करूँगा जंग भी लड़ी जा रही है। जिन देहातों में अमन के ज़माने में पानी नहीं पहुँचा था वहाँ पानी पहुँचा दिया गया जहाँ बिजली नहीं पहुँची थी वहाँ बिजली पहुँचा दी गयी जहाँ रास्ते ख़राब थे वहाँ रास्ते बनवा दिये गये। जनाब थोड़ी सी मुददत के लिये इंक़ेलाब आया इधर के लोग उधर चले गये उधर के लोग इधर चले आये तो आज पाकिस्तान चीख़ रहा है कि अफ़गानिस्तान से आ जाने वाले हमारी मआशियात पर बोझ बने हुऐ हैं ऐ अमरीका लिल्लाह मदद कर ऐ जापान लिल्लाह मदद कर। एक कासए गदाई है कि हर एक से मांगा जा रहा है कि आंतों को पालना पड़ रहा है। लेकिन आप ज़रा ईरान की मआशियात तो देखिये जिस तरह अफ़ग़ानी पाकिस्तान में आये थे उसी तरह उधर के अफ़ग़ानी ईरान में गये हैं। लाखों अफ़ग़ानी मुहाजिर हैं लाखों वो लोग हैं जो सरहदों पर शहरों के तबाह हो जाने की बिना पर आ गए जिन के पास रहने का ठिकाना न था जिनकी पूरी दुनिया बर्बाद हो गयी थी। न मालूम कितने ईराक़ी हैं जो भाग कर मज़ालिम से पनाह लिये हुऐ हैं हज़ूर, और उसके अलावा लाखों यानी एक लाख के करीब वो क़ैदी हैं जो असीर कर लिये गये हैं और उनको इस तरह रखा जा रहा है जैसे कोई मेहमान रहता है मगर उसके बाद इतने मुहाजिरों का बोझ उठाने के बाद न आज तक किसी से एक पैसा मांगा न आज तक किसी ने मदद की। और फ़िर उसके बाद मैं देखता हूँ कि एक पैसे का क़र्ज़ भी नहीं और ममलेकत उसी तरह चल रही है और जंग का ख़र्च उसी तरह बर्दाशत किया जा रहा है। क्या ये दावते फ़िक्र नहीं कि मज़हब ही वो हे जो ख़ाली आख़ेरत ही नहीं दुनिया में भी तुम्हारी कामयाबियों का ज़िम्मादार है।(सलवात)

अलहम्दो लिल्लाहे रब्बिलआलमीन। हम्द उस अल्लाह के लिये जो आलमीन का रब है। आ जा दामने मज़हब में आज भी मज़हब तुझे नजात देने के लिये तैय्यार है आज भी तेरी ज़िन्दगी पाक व पाकीज़ा हो जायगी। आज भी तेरी एख़लाक़ी ज़िन्दगी दुरूस्त हो जायेगी। मज़हब वो है जो हमें बुला रहा है काश हम सिर्फ़ ज़बान से दावाए मज़हब न करें बल्कि सही मानों में मोमिन बन जायें। सही माअनों में मुसलमान बन जायें। मोमिन का काम धोखा देना नहीं है। मोमिन का काम झूठ बोलना नहीं है। मोमिन का काम बदऐख़लाक़ियाँ नहीं हैं। मोमिन का काम बदकारियाँ नहीं हैं। हमारी इस ज़िन्दगी में क्या नहीं मिलता। मौक़ा मिला झूठ बोलकर अपने को बचा लिया। ज़रा सा वक़्त पड़ गया। धोखा दे दिया। बुराई अक्सर इसलिये नहीं करते हैं कि बस में नहीं है लेकिन अगर बुराई के लिये मौक़ा मिल जाये तो बड़े–बड़े फैल जाया करते हैं। दूसरों को नसीहत करने वाले ख़ुद उसी बुराई में

गिरफ़तार हो जाया करते हैं। क्यों? इसलिये कि मज़हब हमारी ज़बान पर है मज़हब हमारी ज़िन्दगी में नहीं है।

ये न कहिये कि आपकी तादाद कम है, ये न कहिये कि आप बहुत कम तादाद में यहाँ हैं छोटी अक़लियत हैं अक़लिल्यत दर अक़लिल्यत हैं। हम कब अकसरियत में रहे हैं? हमारी तादाद तो हमेशा कम रही है। मगर हम गिने नहीं जाते थे हम तौले जाते थे। आज भी आप तादाद न बढ़ाइये किरदार का वज़न पैदा कीजिये तो पूरी दुनिया एक तरफ़ होगी छोटी अक़लिल्यत एक तरफ़ होगी। हमारी तादाद हमेशा कम रही है। हम हर जगह कम रहे। सलतनतें दूसरों के पास रहीं, इक़्तेदार दूसरों के पास रहा, अमल हमारे पास रहा, एख़लाक़ हमारे पास रहा, ये हमारा किरदार अमल व ऐख़लाक़ था जो हमेशा बलन्द करता रहा हैं अभी थोड़े दिन पहले तक आपकी तहज़ीब मशहूर थी। लखनऊ का एख़लाक़ लखनऊ की तहज़ीब, मैं दावे से कहता हूँ कि जिस का दुनिया में कलमा पढ़ा जाता है ये हमारी तहज़ीब है। ये हमारा एख़लाक़ था जिसने लखनऊ का नाम ऊँचा किया। जिस की बिना पर लखनवी तहज़ीब मशहूर थी। लेकिन आज अफ़सोस की बात है कि हमारे नौजवानों में वो तहज़ीब व एख़लाक़ न रह गया जो हमारा तुर्र–ए–इमतियाज़ था जिसकी बिना पर हम पहचाने जाते थे। हमारे बे पढ़े लिखे लोग भी जब गुफ़तगू करते थे तो दूसरे पढ़े लिखे लोग दंग हो जाया करते थे क्यों? इसलिये कि पढ़ा होना और है और कढ़ा होना और है। सोहबत और हमारा माहौल ऐसा था जिस ने ज़हनों को जिला दे दी थी। जिसने हमारे एख़लाख़ व किरदार को बलन्द कर दिया था। आज रोना इसी का है कि हमने अपनी सीरतो किरदार खो दिया। वरना आज भी तादाद की कमी कोई चीज़ नहीं।

आप छोटी तादाद में हैं आप कम तादाद में हैं। आपके मुकाबले में दूसरों की तादाद बहुत ज़्यादा है, मगर क्या तादाद इतनी ही कम है जितनी करबला में थी। कहाँ बहत्तर और कहाँ तीस हज़ार लेकिन ये बहत्तर तीस हज़ार पर भारी थे। आपने देखा कि उन बहत्तर में से किसी बच्चे का मैदान से क़दम हटा। मगर जब ये मैदान में आ जाते थे तो हज़ारों भागते हुऐ नज़र आते थे। ये उनका भागना और फ़रार करना दलील है कि हम अपने किरदार की बिना पर दूसरों पर भारी रहे हैं दूसरों पर वज़नी रहे हैं। हमारी तादाद कम सही लेकिन हम हुसैनी हैं। हमें हुसैनी बन कर दुनिया को दिखाना चाहिये मैं आपकी ख़िदमत में अर्ज़ कर रहा हूँ और ज़रा तवज्जो से सुनें हुसैनियत का मतलब सिर्फ़ जोश नहीं है सिर्फ़ जज़्बा नहीं है। हुसैनियत का मतलब नज़्मों ज़प्त का क़ायम रखना है। हुसैनी वो होते हैं कि जो निगाह को देख रहे हैं अगर इजाज़त है तो आगे बढ़ेंगें और इजाज़त नहीं है तो बस अपनी हद से आगे नहीं बढ़ेंगें। और हमें अपनी ज़िम्मेदारियों की हदों में रहना चाहिये। ये हर रोज़ जो हम जोश व जज़्बे में यही चाहते हैं कि आगे बढ़ जायें ये हुसैनी किरदार के मुनासिब नहीं है।

कल आशूर का दिन है। कल आपको मालूम है, सुब्हा से करबला में जाकर पुरसा देंगें, आप फ़ातेमा ज़हरा (अ0)को, वहाँ मातम करेंगें और तीन बजे फ़िर इमाम बाड़ए आसफ़ी में आइये और वहाँ आकर गिरफ़तारियां देना हैं।

ये समझ कर जाइये कि आप अज़ादारी के एक जुज़ को अंजाम दे रहे हैं। आप जलूस निकाला करते थे सड़क पर। अब गोया हकूमत ने इंतेज़ाम किया है कि सड़कों पर मातम करते हुऐ वो आपको ले जाती है, तो वही जज़्बा जो एक अज़ादार का होना चाहिये वो बाकी रहे। कोई ऐसी बात हम न करें जो संजीदगी के खिलाफ़ हो। कोई ऐसी बात न करें जिससे हमारी तहज़ीब हमारे किरदार हमारे एख़लाख़ पर आँच आये। जो जाते हैं वो क़ौम के नुमाइन्दे बन कर जाते हैं। हम जा रहे हैं एक इबादत अंजाम देने। लोग सियासी मक़सद से जाते हैं,

लोग दुनिया के लिये जाते हैं। और हम इबादत करने जा रहे हैं, तो हमारे जज़बात में वही ख़ुलूस बाक़ी रहना चाहिये जो जज़बा इबादत में होता है।

हमने जो अब तक क़दम उठाया है, अब तक दुनिया समझती रही है कि ये क़ौम हर कुर्बानी के लिये तैय्यार रहती है। लेहाज़ा अगर कोई क़दम उठाना है तो समझ बूझ कर। हमें क़ैद से कौन डराएगा। अरे हमारे लिये वो क़ैद क्या चीज़ है कि जब ज़ैनुल आबेदीन (अ0) के हाथों में हथकड़ियां पड़ गयीं, जब ज़ैनब (अ0) के बाज़ू रसन से बंध गये, जब सकीना (अ0) के गले मेंरसन पड़ गयी। तो हमारे लिये कैद हो जाना क्या अहमियत रखता है।

हाँ हज़रात आज मोर्हरम की नौ तारीख़ है और अशरे की आख़री मजलिस। मैं गुज़ारिश हर मरतबा करता हूँ।साले गुज़िशता भी कहा था कि बहुत से हज़रात रात भर जागते हैं, दिन भर थकते हैं, मातम करते हैं करबलाए ताल कटोरा में आते हैं, गिरफ़तारी के लिये इमामबाड़े आसफ़ी में, ज़ाहिर है कि इंसान हैं चौबीस घंटे में थक जाते हैं शामे ग़रीबां में तादाद शोरका की कम हो जाती है। मुझे शौक़ नहीं है, बड़े मजमों में पढ़ता रहता हूँ, ये आपकी दी हुई इज़्ज़त है लेकिन मजलिसे शामे ग़रीबां अपनी जगह एक अहमियत रखती है। क्योंकि आपके लखनऊ कि अज़ादारी उसी के ज़रिये से पूरी दुनिया में पहुँचती है। लेहाज़ा मेरी गुज़ारिश है कि लाख थके हुऐ हों लाख आपने दिन भर मातम किया हो लेकिन क्या ज़ैनब (अ0) से ज़्यादा थके हुऐ हैं? क्या उम्मेकुलसूम से भी ज़्यादा, (अ0) अरे वो बीबियाँ जो तीन दिन से भूखी। जो तीन दिन से प्यासी। अरे वो बीबियाँ जो देख रही हैं कि अभी हुसैन (अ0) हबीब का लाशालाये ही थे कि एक मरतबा मुसलिम इब्ने औसेजा ने कहा अलैका मिन्नस सलाम। और अब उसके बाद ज़रा हुसैन (अ0) के दिल से पूछिये अरे हुसैन (अ0) वो मज़लूम कि जो इतने लाशे उठा चुका अब उसको आवाज़ दे रहे हैं कभी ज़ैनब (अ0) के लाल कमसिन बच्चे कभी भाई की निशानी क़ासिम (अ0) या अम्मा अदरिकनी ऐ चचा मेरी मदद कीजिये कभी अली अकबर (अ0) आवाज़ देते हैं। या अबताह अलैका मिन्नसलाम, ऐ बाबा अली अकबर का सलामे आख़िर क़बूल हो। वालिदे माजिद फ़रमाया करते थे कि हर एक ने मदद के लिये नहीं बुलाया यहां तक कि अब्बास (अ0) की आवाज़ थी या अख़ी अदरिक अखीक ऐ भाई–भाई की मदद किजिये लेकिन अली अकबर (अ0) ने मदद के लिये पुकारा फ़रमाते हैं या अबताह अलैका मिन्नस सलाम ऐ बाबा बस अली अकबर (अ0) का सलाम क़बूल कर लिजिये।फ़रमाते थे कि शायद इसकी वजह ये हो कि हर एक जानता था कि अगर पुकारूँगा तो कोई सहारा देकर लाने वाला है। अरे अब्बास (अ0) को ख़याल था कि भइया आएंगे तो अली अकबर संभाल लेंगे लेकिन अब अली अकबर (अ0) कहते हैं ऐ बाबा अब आने की ज़रूरत नहीं है ऐ बाबा मैं जानता हूँ कि अब्बास (अ0) के ग़म ने कमर तोड़ दी है। अरे मेरी आवाज़ सुन कर आंख़ों की बीनाई भी चली जायेगी, बाबा बस सलाम क़बूल कर लिजिये। मगर हुसैन (अ0) जो जौन का लाशा लाये, हुसैन (अ0) जो तुरकी गुलाम का लाशा लाये, कैसे अली अकबर (अ0) की लाश मैदान में छोड़ दें? अजरोकुमअलल्लाह। लेकिन क्या ये आख़री दाग़ था क्या ये आख़री लाश थी। जो हुसैन ने उठाई। नहीं ये आख़री लाश नहीं थी। अली अकबर (अ0) का लाशा उठाया लेकर चले। ज़रा तवज्जो फ़रमायें। लेकर चले कुछ दूर ले गये। कमर ने जवाब दिया। लाशे को रखा। बच्चों को पुकारा। ऐ बच्चों आओ अपने भाई का लाशा ले चलो। अब छोटे छोटे बच्चे अली अकबर का लाशा उठाये हुऐ हैं।

हाँ जांनिसारों! एक बात अर्ज़ करना है। अभी ताबूत आयेंगें तुम भी कांधा दोगे अरे एक ताबूत हज़ारों उठाने वाले। काश करबला में होते जब हुसैन (अ0) बच्चों को पुकार रहे थे। आओ

जवान का लाशा लेकर चलो। हाँ दोस्तों! अली अकबर (अ0) का लाशा उठाया। मगर मैंने नहीं देखा कि हुसैन (अ0) का बढ़ा हुआ क़दम कभी पीछे हटा हो। लाशा लेकर चले क़दम बढ़ता ही गया रख दिया पीछे नहीं हटा क़दम। मगर हाय वो लाशा जो हुसैन (अ0) के हाथों पर है कभी आगे बढ़े कभी पीछे हटते हैं। कभी कहते हैं इन्ना लिल्लाहे वइन्ना इलैहे राजेऊन। कभी कहते हैं रेज़न बेक़ज़ाएही ही व तस्लीमन लेअमरेह। ये छोटा सा लाशा लेकर दरे ख़ैमा पर आये। बच्चा कमसिन है मगर वज़न इतना है कि हुसैन (अ0) कभी पीछे हट रहे हैं कभी आगे बढ़ रहे हैं।

अब ये आख़री शहीद था हुसैन (अ0) के लिये अब कोई जांनिसार न रह गया था एक मरतबा मैदान में आवाज़ दी ऐ जां निसारो! कहाँ हो? ऐ फिदाकारो! कहाँ हो ? ऐ हबीब कहाँ हो? ऐ मुसलिम कहाँ हो? ऐ ज़ुहैरे क़ैन कहाँ हो? फ़रमाते हैं कि ऐ जाँ निसारो! ऐ फ़िदाकरो! माली अलादेकुम फ़लातोहिब्बूनी अरे अब ये हाल मेरा हो गया कि तुम को पुकार रहा हूँ और तुम जवाब नहीं देते। फ़िर फ़रमाते हैं मगर क्या करूँ मौत ने तुम्हें मजबूर कर दिया।

हाँ मैं अर्ज़ करूँ। दोस्तों! आज आख़री मजलिस है लेहाज़ा दिल भर के रोना भी है हुसैन (अ0) को रूख़सत करना भी है। मैं अर्ज़ करूँ कि हुसैन (अ0) की कोई आवाज़े इस्तेग़ासा ख़ाली नहीं गयी। जब हुसैन (अ0) ने मदद के लिये पुकारा तो कहीं न कहीं से जवाब आया पहली आवाज़े इस्तेग़ासा अमा मन नासिर यनसोरना कि एक मरतबा रोने की आवाज़ ख़ैमे में, पलट के आए कहा मना किया था कि मेरी ज़िन्दगी में रोना नहीं। जवाब मिला कि दिल संभाले थे। मगर क्या करें मौला, अली असग़र (अ0) ने बेचेन कर दिया अरे आपकी आवाज़ सुन कर झूले से ख़ुद को गिरा दिया। मैं कहता हूँ ये क्या था ये जवाब था अली असग़र (अ0) का ऐ मौला क्यों कह रहे हैं कोई मददगार नहीं अभी ये नन्हां मुजाहिद मौजूद है।

उस के बाद फ़िर हुसैन (अ0) ने आवाज़ बलन्द की आमामिन नासेरिन यनसोरोना अमामिन ज़ाबिन यज़ुब्बो अन्ना। एक मरतबा ख़ैमे का परदा उठा। ज़ैनुल आबेदीन (अ0) कभी गिरते हैं कभी उठते हैं कभी संभलते हैं ऐ बाबा मैं मदद को आ रहा हूँ। हुसैन (अ0) ने रूख़ किया ज़ैनब (अ0) की तरफ़ ऐ ज़ैनब (अ0) मेरे बीमार को संभालो। ज़ैनुल आबेदीन न रह गये तो इमामत क्यों कर क़ायम रहेगी ज़ैनब (अ0) संभाल कर ले गयीं।

तीसरी मरतबा आवाज़ दी फ़िर अमामिन नासिरन यनसोरोना अमामिन ज़ाबिन युज़िब अन्ना। हुसैन (अ0) ने कहा अमामिन नासिनिर यनसोरना कभी मलायका आए हम मदद के लिये मौजूद ऐ आक़ा वो मलायका जिन्होंने बद्र में रसूल (स0) की मदद की थी ऐ आक़ा आप के नाना की मदद कर चुके हैं अल्लाह से इजाज़त लेकर आये हैं हमें इजाज़त दे दीजिए हम मदद करें हुसैन (अ0) ने कहा नहीं ऐ मलायका पलट जाओ अरे आवाज़ तो इतमामे हुज्जत के लिये है पलट जाओ पलट जाओ अरे अब मुझे शहादत की मंज़िल पर पहुँचना है। फ़िर आवाज़े इस्तेग़ासा बलन्द की बेहार की रिवायत है कि एक मरतबा फ़लक से एक परचा गिरा और हुसैन (अ0) ने पढ़ा यदे कुदरत से लिखा हुआ। मेरे बन्दे अगर मदद चाहता है तो मैं ख़ुद मदद के लिये मौजूद हूँ बस ये सुनना था कि हुसैन (अ0) ने तलवार न्याम में रख ली ऐ मेरे मालिक अरे मुझे तो इस्लाम बचाना है, मुझे तो दीन बचाना है।

तलवार न्याम में रखी अस्र का वक़्त था अरे ज़ोहर में नमाज़ पढ़ाने वाले हुसैन (अ0) ने नमाज़े अस्र की नियत की, अब जो देखा अशक़िया ने कोई तलवार लेकर बढ़ा, कोई तबर लेकर बढ़ा, कोई नैज़ा लेकर बढ़ा, अरे आख़िर में वो नौबत कि।

बलन्द मरतबा शाहे ज़े सद्रे ज़ीन उफ़ताद
अगर ग़लत न कुनम अर्श बरज़मीं उफ़ताद

अरे हुसैन (अ0) घोड़े से ज़मीन पर आये आलम

शुजाअत का ये है कि रिवायत में है कि घोड़े से गिर पड़े मगर जब तक खड़ा रहा गया हुसैन (अ0) बैठे नहीं और जब तब बैठा गया हुसैन (अ0) ने ज़मीन पर आराम न किया। और जब तक हुसैन (अ0) के हाथ में तलवार रही किसी दुशमन को क़रीब आने की हिम्मत न पड़ी। मगर अब वो वक़्त है कि हुसैन (अ0) ज़मीने गर्म पर ऐड़ियाँ रगड़ रहे हैं। अजरो कुमअलल्लाह बस दोस्तों आख़िरे कलाम में कि अब कोई मददगार नहीं अब कोई नासिर नहीं मगर नहीं अभी एक मददगार था अरे वो घोड़ा जो अब तक ख़िदमत करता रहा था अब जो देखा हुसैन (अ0) ग़श में हैं हिम्मत बढ़ गई है दुशमनों की क़रीब आ रहे हैं रिवायत की लफ़्ज़ें हैं एक मरतबा घोड़े ने कनौतियां बदलीं जो क़रीब आया उस पर हमला कर दिया किसी को टापों से रौंदा, किसी को दांतों से, हर बढ़ने वाले को पीछे हटा दिया। एक मरतबा पिसरे साअद की नज़र पड़ी घोड़ा हुसैन (अ0) के चारों तरफ फ़िर रहा है किसी को क़रीब आने नहीं देता अरे ये रसूल (स0) की सवारी का घोड़ा था। जो देख चुका था कि ये वो है हुसैन (अ0) जिसको रसूल (अ0) दोश पर बिठाते थें आज कोई मदद करने वाला न था चारों तरफ़ फ़िर कर हिफ़ाज़त कर रहा था। एक मरतबा पिसरे साअद ने कहा जानते हो लशकर वालो ये घोड़ा कौन है। ये रसूल (अ0) की सवारी में रहा चुका है देखो जाने न पाए। आगे बढ़ कर गिरफ़तार कर लो। कुछ लोग कमन्दें लेकर बढ़े चाहते थे कि घोड़े को गिरफ़तार करें कि एक मरतबा घोड़े ने उस दस्ते पर हमला कर दिया इतनी टापें मारीं कि पलट गये। ज़ख़्मी होके पलटे थे कुछ ने गुस्से में दोश से कमान, तरकश से तीर निकाल कर एक मरतबा घोड़े का निशाना लेना चाहा कि पिसरे साअद अपने घोड़े की रकाबों पर खड़ा हो गया मुसलमानों! भूल गये मैंने कहा था, ये रसूल (स0) की सवारी के घोड़े को तीर लगा रहे हो। ऐ पिसरे साअद। रसूल की सवारी के घोड़े को तीर न लगे और हुसैन (अ0) का बच्चा हुसैन (अ0) के हाथों पर तीर का निशाना बन जाये। अजरोकुमअलल्लाह। बस आख़री कलाम में सुनें। एक मरतबा कहा पहलवानो! हट जाओ देखो ये घोड़ा करता क्या है। फ़ौज वाले हटे अब जो देखा दुशमनों को दूर है घोड़ा क़रीब आया रिवायत की लफ़्ज़ें हैं उसने अपने दांतों और दहन से हुसैन (अ0) का बाज़ू हिलाना शुरू किया। मतलब ये था आक़ा आप ग़श में हैं हर तरफ़ दुशमनों का मजमा है आइये सवार करके ख़ैमे तक पहुँचा दूँ। मगर जब देखा हुसैन (अ0) आंखें नहीं खोलते। ज़रा तवज्जो फ़रमायेंगें। सुनें आप एक मरतबा क्या हुआ जब देखा हुसैन (अ0) आंखें नहीं खोलते। सर से पैर तक देखा। देखा यूँ तो पूरा जिस्म ज़ख़्मी है मगर सीने से ख़ून का फ़व्वारा उबल रहा है, घुटने तोड़ कर बैठा अपनी पेशानी को ख़ून से रंगा अब चला ख़ैमे की तरफ़ इस तरह जैसे माँ कोई अपने बच्चे को रोती है। मैं कहता हूँ ऐ फ़रसे वफ़ादार अरे ये ख़ून से चेहरे को रंगना किससे सीखा। शायद फ़रस जवाब दे अरे मैंने अपने आक़ा को देखा कि कभी अली असग़र (अ0) का ख़ून कभी अली अकबर (अ0) का ख़ून। मैंने हुसैन का ख़ून मला दरे ख़ैमा पर आया टापें मारना शुरू कीं आवाज़ देना शुरू की अरे बीबीयां समझीं हुसैन (अ0) आये हैं। ज़ैनब (अ0) ने सकीना को दरे ख़ैमा पर भेजा। बच्ची ने देखा घोड़ा तो मौजूद है। मगर सवार मौजूद नहीं है। घोड़े की गर्दन से लिपट गयीं। बता मेरा बाबा कहाँ है?

रुबाई

ख़तीबे अकबर मौलाना औलाद हुसैन शाएर इज्तेहादी

पीरी ने दिया अजब ठिकाना मुझको
नाचीज़ समझता है ज़माना मुझको
कल आईना कहता था क़सम दे दे कर
ग़ैरत हो तो अब मुँह न दिखाना मुझको